जीविका
JEEViKA

THE ChangeMakers

बिहार सरकार

April to June 2023 Issue 16

Transforming Rural Bihar

पशुधन विषेशांक

जीविका द्वारा संचालित पशुधन गतिविधियाँ
Page 01

सीमांचल जीविका गोट प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड
Page 06

समेकित मत्स्य पालन
Page 13

बड़की दीदी
Page 24

From the editor's desk

Dear Readers,

Greetings and good wishes! It is my absolute pleasure to bring you the latest edition of The ChangeMakers. In this issue, we shine a spotlight on an integral aspect of JEEVIKA's Livestock intervention - Fisheries, Dairy, Poultry and Goat rearing. We prioritize capacity-building by providing training and technical assistance to more than 3674 Pashu Sakhis, equipping them with knowledge and skills. One of the significant achievements of JEEVIKA's livestock intervention is the milk collection at 829 MPP centres across the state with an average pouring of more than 63000 litres/day. Kaushiki Mahila Milk Producer Company Ltd. (A JEEVIKA's venture) is now a Rs. 180 Cr company have launched its flagship products – JEEVIKA Dahi and JEEVIKA Ghee. From tales of farmers who have embraced sustainable farming practices to accounts of communities experiencing improved incomes and food security, these stories will fill you with hope and reaffirm our commitment to fostering inclusive growth.

Wishing you an engaging and enlightening reading experience.

Regards
Mahua Roy Choudhury
pc.gkm@brlps.in

EDITORIAL TEAM

- **Mrs. Mahua Roy Chaudhury**
  Program Coordinator (G&KM)
- **Mr. Rakesh Kumar Singh**
  State Project Manager (Livestock)
- **Mr. Pawan Kr. Priyadarshi**
  Project Manager (Communication)

CONTENT COMPILATION TEAM

- **Mr. Biplab Sarkar**
  Manager Communication
- **Mr. Rajeev Ranjan**
  Manager Communication, Begusarai
- **Mr. Rajeev Ranjan**
  Manager Communication, Siwan
- **Mr. Arpan Mukherjee**
  Young Professional-KMC

संदेश

श्री राहुल कुमार (भा.प्र.से.)
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका (BRLPS)
राज्य मिशन निदेशक, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान

जीविकोपार्जन की गतिविधियों में पशुपालन का महत्वपूर्ण स्थान है। बिहार की अर्थव्यवस्था को गति देने में पशुपालन की भूमिका भी अहम है। पशुपालन के विभिन्न आयामों से राज्य के विकास को गति मिल रही है। जीविका अपने लक्षित समूह सदस्यों के बीच पशुपालन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। पशुपालक दीदियों के लिए जीविका विभिन्न स्तरों पर तकनीकि सहयोग प्रदान कर रही है। गाय पालन, बकरी पालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन आदि गतिविधियों से जीविका की 7 लाख से अधिक दीदियां जुड़ी हैं। इन दीदियों को जीविका द्वारा प्रशिक्षित कर उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान की जा रही है। इसके साथ ही विभिन्न विभागों एवं योजनाओं के साथ समन्वय स्थापित कर जीविका दीदियों को पशुपालन गतिविधियों का लाभ दिलाया जा रहा है। उन्हें व्यवसायिक रूप से दक्ष भी बनाया जा रहा है। पशुपालन गतिविधियों के बढ़ने से दीदियों के बीच जीविकोपार्जन की गतिविधियों में बढ़ोत्तरी हुई ही है, वहीं वह आर्थिक रूप से सशक्त भी हो रही हैं।

(राहुल कुमार)

CONTENTS

जीविका द्वारा संचालित पशुधन गतिविधियाँ 01
मुर्गी पालन से सुधरी दीदियों के घर की सेहत..... 04
सीमांचल जीविका गोट प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड..... 06
जल–जीवन–हरियाली, जीविका दीदी की खुशहाली..... 08
Dairy intervention as Livelihoods alternative..... 10

संदेश

डॉ. एन सरवण कुमार (भा.प्र.से.)
सचिव, ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

पशुपालन की विभिन्न गतिविधियों ने राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक सशक्तीकरण का नया मार्ग प्रशस्त किया है। रोजगार और आय सृजन की दृष्टि से पशुपालन का बिहार की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। पशुपालन के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन के लिए जीविका निरंतर कार्य कर रही है। पशुपालन गतिविधियों से जीविका दीदियों के बीच रोजगार सृजन के साथ आर्थिक सशक्तिकरण एवं उनके स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ है। इसकी सफलता के लिए जीविका अपने लक्षित समूहों को विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षित कर उन्हें व्यवसायिक रूप से भी दक्ष बनाती है। पशुपालन के क्षेत्र में महिलाओं को बराबर भागीदारी के लिए भी जीविका निरंतर कार्य कर रही है।

आज इसी का परिणाम है कि पशुपालन की गतिविधियों से काफी बड़ी संख्या में जीविका दीदियाँ जुड़ी हैं और आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। इससे राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति मिल रही है।

(डॉ. एन सरवण कुमार)

CONTENTS

समेकित मत्स्य पालन 13
Different Schemes of Livestock Intervention 15
Community Professionals Under LIVESTOCK Theme 18
बड़की दीदी 25
मन की कलम से 27

जीविका द्वारा संचालित
पशुधन गतिविधियाँ

Bikash Kumar, Manager Communication, Bhagalpur
Rajeev Ranjan, Manager Communication, Siwan
Rajeev Ranjan, Manager Communication, Begusarai

जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़े परिवारों को जीविकोपार्जन की विभिन्न गतिविधियों से जोड़ कर उनकी आय को बढ़ाने के लिए निरंतर कार्य किये जा रहे हैं। जीविकोपार्जन संबंधी गतिविधियों में मुख्य रूप से कृषि, गैर कृषि तथा पशुधन संबंधी गतिविधियाँ शामिल हैं। ग्रामीण क्षेत्र से जुड़े अधिकांश परिवारों की रोजी–रोटी का मुख्य आधार कृषि है। ऐसे में ये परिवार कृषि के साथ–साथ पशुधन संबंधी गतिविधियों को भी बखूबी अपनाते हैं। दरअसल कृषि एवं पशुपालन को एक–दूसरे का पूरक माना गया है। साथ ही आय प्राप्ति में भी ये सहायक होते हैं। ग्रामीण परिवेश में पशुधन को उत्पादक परिसंपत्ति का दर्जा दिया गया है। बहरहाल पशुधन गतिविधियों से जुड़े परिवारों को रोजगार एवं आय सृजन के साथ–साथ पोषण संबंधी आवश्यकताओं की भी पूर्ति होती है। यही कारण है कि जीविका द्वारा स्वयं सहायता समूह से जुड़े परिवारों को पशुधन संबंधी गतिविधियों में शामिल करने पर विशेष जोर दिया गया है। पशुधन संबंधी गतिविधियों में मुख्य रूप से गाय, भैंस, बकरी, मत्स्य, बत्तख, मुर्गी आदि का पालन काफी बड़े स्तर पर किया जा रहा है। जीविका द्वारा पशुपालन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार की रणनीतिक पहल की गई है। इस दिशा में समूह से जुड़े परिवारों को जीविका परियोजना की ओर से वित्तीय, तकनीकी एवं विपणन संबंधी मदद के साथ राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के साथ अभिसरण के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है। एक तरफ मनरेगा के माध्यम से गाय एवं बकरी शेड का निर्माण किया जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ जल–जीवन–हरियाली अभियान के तहत सार्वजनिक तालाबों को जीविका ग्राम संगठनों को आवंटित कर मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके अलावा मुर्गी पालन के लिए भी सरकार की ओर से विशेष पहल की गई है।

जीविका के माध्यम से निम्न प्रकार की पशुधन संबंधी गतिविधियाँ की जा रही है :–

1. गाय–भैंस पालन से दूध उत्पादन एवं स्वास्थ्य सवंर्धन को मिल रहा प्रोत्साहन :–

दूध उत्पादन को बढ़ावा देने तथा सुगमतापूर्वक बिक्री हेतु कोशी प्रमंडल के सभी तीन जिलों– सहरसा, सुपौल और मधेपुरा में जीविका के द्वारा कौशिकी मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी की स्थापना की गई है। इससे बड़ी संख्या में जीविका दीदियां जुड़कर दूध की बिक्री कर रही हैं। जीविका दीदियां कंपनी को न केवल दूध की आपूर्ति करती हैं बल्कि वे इस कंपनी का शेयरधारक भी हैं। कौशिकी मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी के द्वारा दूध की बिक्री के अलावा दही, घी, चीज, पनीर, मक्खन, पेड़ा आदि का उत्पादन एवं बिक्री का कार्य किया जा रहा है। इस प्रकार के प्रयासों से जीविका समूह से जुड़े परिवारों को दूध उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

2. समेकित मुर्गी विकास योजना के तहत मुर्गी पालन का कार्य :–

जीविका समूह से जुड़े परिवारों को मुर्गी पालन गतिविधि अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। जीविका दीदियों को मुर्गी पालन गतिविधि से जोड़ने के लिए दो प्रकार की योजना क्रियान्वित की जा रही है। पहला, समेकित मुर्गी विकास योजना और दूसरा, पूर्ण लागत अर्थात फुल कॉस्ट मॉडल। समेकित मुर्गी विकास योजना (आई.पी.डी.एस.) का पहला चरण सामाप्त होने के बाद इसका दूसरा चरण आई.पी.डी.एस–2 शुरू की गई है। फिलहाल राज्य के सभी जिलों में यह योजना कियान्वित है। बिहार सरकार के पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के सहयोग से चलाई जा रही इस योजना में मुर्गी पालन हेतु सब्सिडी का प्रावधान है। इसके तहत पूर्व में स्थापित मदर यूनिट में एक दिन के चूजों की खरीद और इन्हें पालने में होने वाले खर्च में सब्सिडी दी जाती है। साथ ही मदर यूनिट से जुड़े परिवारों को ये चूजे सब्सिडी दर पर वितरित किए जाते हैं। इस प्रकार इसे सब्सिडी मॉडल भी कहा जाता है। दूसरी तरफ, पूर्ण लागत मॉडल के तहत किसी भी प्रकार की सब्सिडी नहीं दी जाती है। इसके तहत मुर्गी पालन में होने वाला पूरा खर्च समुदाय को ही वहन करना पड़ता है। यह योजना भी राज्य के विभिन्न जिलों में संचालित है।

3. बकरी पालन गतिविधि :–

बकरी पालन को बढ़ावा देने के लिए जीविका द्वारा बकरी उत्पादक समूहों एवं बकरी उत्पादक कंपनी की स्थापना की गई है। जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़े परिवारों को उत्पादक समूह में शामिल कर इन्हें बकरी पालन गतिविधि से जोड़ा जा रहा है। पूर्वोतर बिहार में स्थित सीमांचल क्षेत्र के लोगों के लिए बकरी पालन जीविकोपार्जन का एक अहम हिस्सा है। लेकिन, बाजार की अनउपलब्धता और समुचित मूल्य नहीं मिलने के कारण इस इलाके के पशु पालकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। जिसे आसान करने एवं बेहतर बाजार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सीमांचल क्षेत्र में पशु पालक जीविका दीदियों को संगठित कर सीमांचल जीविका बकरी उत्पादक कंपनी की स्थापना की गई है। वर्त्तमान में कंपनी सीमांचल क्षेत्र के अररिया, पूर्णियाँ और कटिहार जिले के 17 प्रखंडों में काम कर रही है। कंपनी के माध्यम से क्षेत्र की जीविका दीदियों को उनकी बकरी का उचित मूल्य मिल रहा है और बकरी पालन हेतु तकनीकि सहयोग भी प्रदान की जा रही है।

4. जल–जीवन–हरियाली अभियान के तहत समेकित मत्स्य पालन गतिविधि :–

राज्य सरकार ने जल जीवन हरियाली मिशन के तहत प्रोत्साहित तालाबों का रख–रखाव जीविका संपोषित ग्राम संगठनों से कराने का मंत्रीमंडलीय निर्णय लिया गया। इसके के तहत नव सृजित एवं जीर्णोद्धार किए गए सार्वजनिक तालाबों या जलाशयों के रख–रखाव के साथ–साथ जीविका समूहों से जुडे परिवारों के जीविकोपार्जन के उद्देश्य से जीविका के सामुदायिक संगठनों को आवंटित किया जा रहा है। जीविका द्वारा इन सार्वजनिक तालाबों या जलाशयों में सामुदाय आधारित मत्स्य पालन एवं समेकित मत्स्य पालन गतिविधि को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे सामुदायिक संगठनों से जुड़ी महिलाओं के लिए जीविकोपार्जन के नये अवसर सृजित हो रहे हैं। अबतक 2500 से अधिक जीविका दीदियाँ इससे जुड़ी है।

मुर्गी पालन से सुधरी दीदियों के घर की सेहत

Bikash Kumar, Manager Communication, Bhagalpur

जीविका समूह से जुड़े परिवारों को विभिन्न जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़कर उनके घर की आमदनी बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश परिवारों की रोजी–रोटी का मुख्य आधार कृषि एवं पशुपालन है। इन परिवारों को पशुपालन की विभिन्न गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है। पशुधन गतिविधियों में मुख्य रूप से गाय–भैंस पालन, बकरी पालन, मत्स्य–बत्तख पालन एवं मुर्गी पालन का कार्य किया जा रहा है। जीविका समूह की दीदियों को मुर्गी पालन योजना के तहत बैकयार्ड मुर्गी पालन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। ये लो–इनपुट प्रजाति वाली मुर्गी होती है। इन्हें पालने में अपेक्षाकृत कम लागत होती है जबकि अधिक मात्रा में मांस एवं अंडे का उत्पादन होता है। इस प्रजाति

की मुर्गियां विभिन्न रंगों की होती है, जिसे 'कलर्ड बर्ड' भी कहा जाता है। आमतौर पर देशी मुर्गी भी रंगीन होती है, लेकिन मांस एवं अंडा उत्पादन के दृष्टिकोण से इसे बेहतर माना गया है। इसे 'डयूल पर्पस बर्ड' भी कहा जाता है। यह तीन माह में करीब 2.5 किलोग्राम वजन तक हो जाती है। वहीं एक मुर्गी साल भर में लगभग 150 अंडे देती है। इस प्रजाति की मुर्गियों को घर के पिछवाड़े में पाला जाता है। ये घरों के अपशिष्ट खाद्य पदार्थों एवं अन्य चीजें खाकर पेट भरने में सक्षम होती हैं। इससे इन्हें पालने हेतु बाजार से दाने खरीदने की आवश्यकता नहीं होती है।

जीविका दीदियों को मुर्गी पालन से जोड़ने के लिए दो प्रकार की योजना क्रियान्वित की जा रही है। पहला, समेकित मुर्गी विकास योजना और दूसरा, पूर्ण लागत (फुल कॉस्ट) मॉडल। समेकित मुर्गी विकास योजना (आई.पी.डी.एस.) का पहला चरण समाप्त होने के बाद इसका दूसरा चरण आई.पी.डी. एस–2 शुरू की गई है। फिलहाल राज्य के सभी जिलों में यह योजना क्रियान्वित की जा रही है। बिहार सरकार के पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के सहयोग से चलाई जा रही इस योजना में मुर्गी पालन हेतु सब्सिडी का प्रावधान है। इसके तहत पूर्व में स्थापित मदर यूनिट में एक दिन के चूजों की खरीद और इन्हें पालने में होने वाले खर्च में सब्सिडी दी जाती है। साथ ही मदर यूनिट से जुड़े परिवारों को ये चूजे सब्सिडी दर पर वितरित किए जाते हैं। इसे सब्सिडी मॉडल भी कहा जाता है। दूसरी तरफ, पूर्ण लागत मॉडल के तहत किसी भी प्रकार की सब्सिडी नहीं दी जाती है। इसके तहत मुर्गी पालन में होने वाला पूरा खर्च समुदाय को ही वहन करना पड़ता है। फिलहाल यह योजना राज्य के विभिन्न जिलों में क्रियान्वित है।

समेकित मुर्गी विकास योजना लागू करने की प्रक्रिया :– इस योजना के तहत सूक्ष्म नियोजन के पश्चात 180 परिवारों को मदर यूनिट से जोड़ा जाता है। प्रत्येक परिवारों को 45 चूजे दो बार में उपलब्ध कराए जाते हैं। पहली बार में 25 चूजे एवं दूसरी बार में 20 चूजे दिए जाते हैं। इसके लिए प्रत्येक दीदी से 10 रुपये प्रति चूजे की दर पर कुल 450 रुपये अंशदान के रूप में नोडल ग्राम संगठन या संकुल स्तरीय संघ में जमा कराया जाता है। इस प्रकार एक मदर यूनिट में एक दिन के कुल 8100 चूजे 28 दिनों तक पाला जाता हैं। इन चूजों को 28 दिनों तक पालने के बाद इन्हें दीदियों के बीच वितरित किया जाता हैं। मदर यूनिट संचालक को चूजा पालने हेतु 6 रुपये प्रति जीवित चूजे की दर से भुगतान किया जाता है। साथ ही इस योजना के तहत एक दिन के चूजों एवं दाने की खरीद, चूजों के पालन–पोषण में तकनीकी मदद के अलावा इसके टीकाकरण आदि में भी पूरी सहायता प्रदान की जाती है। वहीं मुर्गी पालने वाले लाभुकों को पिंजड़ा बनाने के बाद प्रोत्साहन राशि के तौर पर 1,000 रुपये सीधे उनके खाते में हस्तांतरित कराए जाते हैं। अब तक 388 उत्पादक समूहों का गठन कर इससे 60100 परिवारों को जोड़ा गया है। इस प्रकार समेकित मुर्गी विकास योजना से जुड़कर समूह की दीदियां कम लागत में ज्यादा मात्रा में मांस एवं अंडे प्राप्त कर रही हैं। इससे उनके घर की आमदनी एवं सेहत दोनों सुधर रही है।

सीमांचल जीविका गोट प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

(बकरी पालन के विकास के लिए परिकल्पित)

Narayan Kumar, Manager Communication, Araria

राज्य के ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले गरीब और समाज के पिछड़े वर्ग को सहारा देकर उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने के लिए जीविका सतत् प्रयासरत है। इसके अन्तर्गत जीविकोपार्जन से संबंधित सभी संभव साधनों को अपना कर समाज के उत्थान में जीविका की भूमिका काफी सराहनीय है। सीमांचल क्षेत्र के लोगों के लिए बकरी पालन जीविकोपार्जन का एक अहम हिस्सा है। सीमांचल इलाके के लगभग 70 फीसदी परिवारों के पास औसतन 3 से 5 बकरियां हैं। लेकिन, वजन के अनुसार बकरी का उचित मूल्य नहीं मिल पाने, बिचौलियों द्वारा शोषण और असंगठित बाजार के कारण बकरी पालक दीदियों में उदासीनता का माहौल था। इस समस्या से निदान दिलाने हेतु पशु पालक जीविका दीदियों को संगठित और बेहतर बाजार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'सीमांचल जीविका गोट प्रोडूसर कंपनी' की स्थापना की गई है। वर्त्तमान में इसके अन्तर्गत सीमांचल क्षेत्र के तीन जिले – अररिया, पूर्णियाँ और कटिहार की दीदियाँ शामिल हैं। यह कंपनी अररिया, पूर्णियाँ और कटिहार के जिले के 17 प्रखंडों में कार्य कर रही है।

इस कंपनी का उद्देश्य अपने सभी बकरी पालकों को उत्पादन संबंधी सेवाएं प्रदान करना, बकरी क्रय–बिक्रय के लिए व्यवस्थित बाजार उपलब्ध करना और एक पारदर्शी व्यवस्था मुहैया कराना है। इस कंपनी ने फिलहाल 15 प्रखंडों में बकरी संग्रह केन्द्रों की स्थापना की है। जिसके माध्यम से बकरियों की क्रय–विक्रय के अलावा इनपुट सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। इसके सुगमतापूर्वक संचालित करने के लिए एक व्यवस्था विकसित की गई है। इस कंपनी का मुख्यालय अररिया में स्थित है।

अब तक इस कंपनी द्वारा 605 सदस्य दीदियों से 870 बकरियों का क्रय–विक्रय किया गया है। जिसकी कुल 20,35,542 रुपये की राशि सदस्य दीदियों के बैंक खाते में सीधे हस्तांतरित की गयी है। बकरी स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से अबतक 10,094 परिवारों की 25,244 बकरियों को कृमिनाशक दवा दी गयी है जबकि 4,165 परिवारों की 9,180 बकरियों का टीकाकरण किया गया है। इसके अलावा इस कंपनी के माध्यम से अपने सदस्यों को संतुलित आहार उपलब्ध कराया जा रहा है। जिसमें बकरी दाना, मिनरल मिक्सचर, हरे चारे का बीज, अजोला वसाईलेज बाजार से सस्ते दरों पर उपलब्ध कराया जा रहा है। पशु सखी घर–घर जाकर दीदी की बकरियों को कृमि नाशक दवा देने के अलावा इलाज भी करती हैं, ताकि बकरियां स्वस्थ रहे। इससे उन्हें बिक्री के समय बकरियों की सही कीमत मिल पाती है। इसके अलावा माइक्रोसेव संस्था तकनीकी सहयोग भी मुहैया करा रही है। इससे दीदियों को बकरी पालन में मदद मिल रही है। कंपनी के माध्यम से समाज के सबसे पिछड़े और वंचित परिवारों को आर्थिक संबल प्रदान करने में सफलता मिल रही है।

जल-जीवन-हरियाली

जीविका दीदी की खुशहाली

Md. Saif, YP-KMC,
Rajeev Ranjan, Manager Communication, Siwan

जल–जीवन–हरियाली अभियान एक स्वायत्त निकाय है। यह सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1860 के तहत निबंधित है। जल–जीवन–हरियाली अभियान बहुहित धारक कार्यक्रम है, जिसके तहत पर्यावरण संरक्षण, जलवायु स्थिरता, जल निकायों का संरक्षण और जीर्णोद्धार, जल प्रदूषण से जलाशय को संरक्षित रखना, भू जल स्तर संरक्षण और हरित आवरण को बढ़ावा देने आदि का कार्य किया जा रहा है। जल–जीवन हरियाली अभियान को विभिन्न विभागों के समन्वय से कियान्वित किया जा रहा है । ग्रामीण विकास विभाग को नोडल विभाग के रूप में नामित किया गया है।

जल–जीवन–हरियाली अभियान की स्थापना 11 लक्षित अवयवों को मिशन मोड में त्वरित कार्यान्वयन के लिए की गई है, जिसमें सभी सार्वजनिक पारंपरिक जल भंडारण संरचनाओं की पहचान और कायाकल्प, छोटी नदियों / नालों में चेक डैम और अन्य जल संचयन संरचनाओं का निर्माण और पहाड़ी क्षेत्र में जल भंडारण, नए जल स्रोतों का निर्माण शामिल है और अधिशेष नदी क्षेत्र से जल की कमी वाले क्षेत्रों में जल का उठाव/वितरण, भवनों में वर्षा जल संचयन संरचनाओं का निर्माण, नर्सरी का सृजन और सघन वृक्षारोपण, सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने और ऊर्जा के संरक्षण को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ वैकल्पिक फसल, ड्रिप सिंचाई, जैविक खेती और अन्य नई तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देना है।

जल–जीवन–हरियाली अभियान के द्वारा बिहार में कई सार्वजनिक जलाशयों को सरकार द्वारा चिह्नित कर जीविका दीदियों को मत्स्य पालन कर आमदनी को बढ़ाने एवं जलाशय की देख –भाल हेतु जीविका के ग्राम संगठनों को आवंटित करने का मंत्रीमंडलीय निर्णय लिया गया एवं ग्राम संगठनों को हस्तांतरित भी किए गए है। उन जलाशयों की देख–भाल जीविका दीदियों द्वारा किया जाता है। उनमें से एक जलाशय भोजपुर जिला के आरा सदर प्रखंड के पिरौटा पंचायत अंतर्गत जोग्वालिया गाँव में भी है जिसे 22.02.2021 को भास्कर जीविका महिला ग्राम संगठन को 5 वर्ष के लिए आवंटित किया गया है।

इसके बाद ग्राम संगठन की दीदियों ने आवंटित तालाब में मछली पालन करने का निर्णय लिया। मछली उत्पादन एवं उसके व्यवसाय हेतु भास्कर जीविका महिला मत्स्य उत्पादक समूह का गठन किया गया है। इस उत्पादक समूह से जुड़ी कई दीदियां ऐसी हैं जो पहले भी मत्स्य पालन से जुडी हुई हैं। उत्पादक समूह में जुड़ने से दीदियों को मत्स्य पालन के बारे में जानकारी में वृद्धि हुई है। दीदियों को मदद के लिए ग्राम संगठन ने मत्स्य सखी की नियुक्ति की है जो ग्राम संगठन की मदद मत्स्य पालन और व्यापार में करती है।

ग्राम संगठन की दीदियों और मत्स्य सखी की मदद से तालाब की देख–रेख बेहतर तरीके से की जा रही है। जीविका महिला मत्स्य उत्पादक समूह नियमित रूप से बाजार का विश्लेषण करता है और अन्य बाजार में अपने उत्पाद को बेचने के लिए खरीदार खोजता है।

Empowering JEEVIKA Didis

for Dairy intervention as Livelihoods alternative

Arpan Mukherjee, Young Professional, KMC

Rural communities in the Koshi River basin, a trans-boundary river basin in the Hindu Kush-Himalayas, have been experiencing unprecedented difficulties for adapting with the livelihood challenges arising from floods, droughts and other climatic, environmental and socio-economic stresses. The single purpose adaptation approach often fails to address the multiple challenges arising from cascading effects of climate change at different scales and stages. Initial challenges were manifold, including low yield, high operational costs, indigenous breeds, rotten milk, flooding, flood-related migration leading to animal fatalities, and a trade-off between food and fodder. During the incubation phase, JEEViKA under the aegis of the Government of Bihar, played a pivotal role in facilitating the KMMPC's operations by adopting a nurturing role. The initial thrust was to enlist and identify all eligible Self-Help Group (SHG) members who owned milch animals as members of the KMMPC. Given JEEViKA's widespread acceptance and socially sustainable objectives linked with the social and economic empowerment of women, it was evident that female milk producers dominated the landscape, and the producer company, as envisioned by JEEViKA, was bound to be women-centric.

On September 22, 2017, a long-held aspiration of the populace from four districts in the Kosi basin was actualized through the incorporation of the Kaushikee Mahila Milk Producer Company (KMMPC) under the aegis of the Companies Act 1956. The principal objective of the KMMPC was to furnish a sustainable alternative livelihood to female milk producers of this region by executing proficient and well-organized dairy practices, which entailed the provision of an unwavering buyer who paid the suppliers promptly and remunerated them competitively for their milk throughout the year. It was also envisioned that the KMMPC would uphold transparency, equity, and inclusivity in its functioning and governance. Furthermore, the KMMPC would offer technical support services in the areas of breeding, nutrition, and the care and management of milch animals to augment milk productivity for the members' benefit.

The KMMPC functioned on a membership-based model, exclusively conducting business with members who were mostly local women involved in milch cattle farming within the particular geographic area. The members' equity was commensurate with their patronage, i.e., their shares were linked to the amount of milk they deposited. This approach is commonly known as "skin-in-the-game" and is a significant factor in the KMMPC's outstanding growth and survival during the pandemic. Furthermore, membership continued only if the minimum milk quantity requirements were met, ensuring that no one could take advantage of the situation, thus mitigating the risk of moral hazard.

In addition, members had representation on the board of directors, which was responsible for the overall management of the producer company. To provide technical and managerial expertise, skilled directors were appointed to the board to guide women on the proper direction and strategies to employ. The board was to remain apolitical and impartial, free from any political party affiliation.

In addition to their core activities, KMMPC actively engages in continuous training and capacity building initiatives, which encompass various programs such as producer awareness, director skill-building, and exposure visits. Moreover, they offer productivity enhancement services aimed at improving yield, such as doorstep artificial insemination delivery and fertility management for animal breeding. Other essential components include animal nutrition, preventive health, and extension and promotion. From a managerial efficiency standpoint, KMMPC establishes standard operating procedures (SOPs) that serve as the basis for their operations, resulting in greater efficiency and comprehensibility throughout the value chain management. KMMPC also boasts a robust IT and database management system and is managed by a team of competent executives and professionals.

Process Flow

KMMPC's business model involves a two-way approach. The organization sources milk from Milk Procurement Points (MPPs) and, after ensuring quality control through its supply chain logistics, sells the collected milk to institutional buyers. In return, producers receive payment for their milk. Moreover, KMMPC provides technical input services, disseminating knowledge on scientific breeding, nutrition, and healthcare through various extension activities such as Dairy Management Trainings, Film Shows, Calf Rallies, Infertility Management Camps, and Distribution of Extension Material.

Through this business model, KMMPC managed to sell 6,551,020 KGs of raw milk in the financial year 2020-2021 (between April 2020 and March

2021). In the same period, KMMPC sold 9,962 bags of cattle feed and 17,201 KGs of mineral mixture. The revenue generated from the sale of raw milk alone was INR 25,37,95,720, an increase of 56% over the previous financial year ending in March 2020.

Impact

Having overcome the early challenges such as indigenous cattle, high operating cost, lower efficiency, dilemma among the indigenous producers and other socio-economic hurdles, through focussed management and training of the producers in an inclusive environment, and by offering membership and administrative powers to the stakeholders and producers themselves resulting in an in-built commitment instrument.

In September 2022, KMMPC recorded a peak in the procurement by collecting 79000 KGs of milk. With increasing trend in the membership numbers, it is only natural that this target may be achievable. The primary reason for this is joining the KMMPC is very lucrative for women in these regions. By lucrative, we do not mean only financially beneficial but also in terms of outside options in the local labor markets leading to increased opportunity costs of not participating in KMMPC. Additionally, the social aspect of KMMPC which gives the women a sense of empowerment by directly participating as stakeholders and more importantly decision makers in the firm, attracts several women to join the program. This is where the 2-way model becomes very useful in terms of expanding business operations for a product which is a necessary consumption for these households.
Since the crux of KMMPC's business model is a two-way interaction, a lot of the components that comprise of the cost incurred in the production activities are similar to the ones that bring in revenue.

The cost of procurement of raw milk for KMMPC stood at INR 22,26,88,573 for the FY 2020-21 which is significantly higher compared to the previous year where this cost of raw milk amounted to INR 14,52,38,483. A similar increase in purchase of cattle feed, minerals, semen and dewormer can be observed. KMMPC also incurred significantly higher employee benefits expenses in 2020-21 despite the pandemic at an amount of INR 53,73,953 compared to a much smaller pre-pandemic number of 15,76,389 in 2019-20.

The company is implementing the project titled “Dairy Value Chain Development in Saharsa, Supaul & Madhepura Districts of Bihar under NRLP and Innovation Funds of NRLM.

The project period is for four years starting from February 2018 to March 2022 with the financial assistance from Bihar SRLM and technical support from NDDB Dairy Services.

The Company envisages to enroll 40000 women milk producers as members from 800 villages and achieve an average procurement volume of about 61823 Litres per day (LPD) by end of the project i.e., FY 2022-23.

For implementation of the project, a total of Rs. 3806.30 Lakh was sanctioned as a grant from Bihar SRLM of which Rs. 1891.66 Lakh was towards the Capital Cost and Rs. 1914.64 Lakh was towards Program Cost.

समेकित मत्स्य पालन

जलपरी/जलजीवन जीविका महिला मत्स्य उत्पादक समूह

Narayan Kumar, Manager Communication, Araria

अररिया जिलान्तर्गत रानीगंज प्रखंड के खरहट में जलपरी जीविका महिला मत्स्य उत्पादक समूह और जलजीवन जीविका महिला मत्स्य उत्पादक समूह का गठन किया गया है। इन उत्पादक समूहों को मछली उत्पादन के लिए जीविका की ओर से आर्थिक एवं तकनीकी मदद भी की जा रही है। जीविका की खास पहल पर यहां मछली उत्पादन उन्नत तकनीक से किया जा रहा है। यहां पारंपरिक तकनीक से तालाब में मछली पालन के अलावा बायोफ्लॉक विधि (टैंक में मछली पालन) से भी मछली पालन का कार्य किया जा रहा है। साथ ही तालाबों में बत्तख पालन भी किया जा रहा है। बत्तख पालन से एक ओर जहाँ दीदियों को आय होती है, वहीं बत्तखों के तैरने से तालाब के पानी में ऑक्सीजन पर्याप्त मात्रा में मौजूद रहता है। तालाब के पानी में ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा में मौजूद रहने से मछलियों का विकास बेहतर होता है। इन्हीं सब प्रयासो से समेकित मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया जा रहा है।

जलपरी जीविका महिला मत्स्य उत्पादक समूह का गठन 2 फरवरी 2021 को किया गया है तथा जलजीवन महिला जीविका मत्स्य उत्पादक समूह का गठन 4 फरवरी 2021 को किया गया है। प्रत्येक उत्पादक समूह से 35 दीदियाँ जुड़ी। इस प्रकार इन दोनों उत्पादक समूहों से कुल 70 दीदियाँ जुड़ी हैं। मछली पालन एवं बतख पालन से इन दीदियों के लिए जीविकोपार्जन के नए स्रोत उत्पन्न हुए। इसके अलावा इन दीदियों को दूसरी विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ भी दिलाया गया है। इन उत्पादक समूहों को स्थापित और संचालित करने के लिए जीविका की ओर से नवाचार निधि के तहत 20 लाख रुपये की राशि आर्थिक मदद के रूप प्रदान की गई है। इस आर्थिक मदद की बदौलत जलपरी और जलजीवन मत्स्य उत्पादक समूहों के गठन से लेकर पूरी कार्यप्रणाली को सुचारू रूप से चलाने में बहुत मदद मिली है।

इन दोनों मत्स्य उत्पादक समूहों में समेकित मत्स्य पालन किया जा रहा है। जिसका मतलब मत्स्य–सह–बत्तख पालन है। इसके साथ–साथ यहां बायोफ्लॉक विधि से भी मछली पालन का कार्य किया जा रहा है। जीविका दीदियों की आय बढ़ाने के साथ–साथ मछली उत्पादन में प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जीविका की ओर से यह एक अभिनव प्रयास है जिसकी शुरुआत जीविका द्वारा अररिया जिले से की गई है। इसी तर्ज पर प्रदेश के दूसरे जिलों में भी जीविका की ओर से मछली पालन का कार्य शुरू किया जा रहा है। अभी भी बिहार के कई इलाके ऐसे हैं जहां दूसरे राज्यों से आई मछलियों की बिक्री होती है। लोगों को स्थानीय मछली उपलब्ध नहीं हो पाता है। स्थानीय मछली की आवश्यकता को पूरा करने के लिए जीविका प्रयासरत है।

शुरूयात में जलपरी और जलजीवन जीविका महिला मत्स्य उत्पादक समूह में 247 किलाग्राम फिंगरलिंग (मछली बीज या जीरा) तालाब में डाला गया है। अब तक 1043 किलोग्राम मछली बाजार में बेची जा चुकी है। जिससे कुल 1,64,650 रुपये की आय हुई है। बत्तख पालन 'खाकी कैम्पवेल नस्ल' का किया जा रहा है। इसके तहत 369 बत्तखों का पालन किया जा रहा है। जिसमें बत्तख के अंडों को बेचने पर दीदियों को 46972 रुपये की आय हुई है। बायोफ्लॉक टैंक में 10000 पीस 'कबई मछली सीड' डाली गई है जिसमें से 173 किलो ग्राम मछली जो 100 ले 200 ग्राम वजन की थी, इसकी बिक्री भी की जा चुकी है। मछली की बिकी से कुल 39757 रुपये की आमदनी हुई है। जलपरी जीविका महिला मत्स्य उत्पादक समूह द्वारा कुछ माह पहले 317 किलोग्राम इयरलिंग (रोहू, कतला, बिग हेड आदि) तालाब में डाला गया है। जिससे लगभग 2000 किलोग्राम मछली उत्पादन की संभावना है।

Different Schemes of Livestock Intervention

Arpan Kumherjee, Young Professional, KMC

Livestock husbandry serves as a supplementary source of revenue for the indigent rural populace of Bihar. It plays a crucial role in providing income and employment opportunities to millions of impoverished landless individuals in the region, while constituting a significant contributor to the state's rural economy, accounting for approximately one-fifth of the overall rural income. Furthermore, the sector offers prospects for livelihood and income generation, particularly for marginalized sections and women. Enhancing this sector can contribute to a more equitable development of the rural economy. The 2019 livestock census indicates that Bihar's livestock population has surged to 49.24 million from 32.94 million in 2012, with 73% of the stock comprising of milk-giving animals, of which cows and buffaloes make up 42% and 21%, respectively. The overall livestock population in the state is increasing steadily, with goats and poultry representing 51% of the total livestock population. JEEVIKA has implemented various schemes to bolster livestock interventions aimed at enhancing household income.

1. Pashu Sakhi Model

Goat rearing is a good livelihood option for the landless, small and marginal farming households in Bihar as the demand for its meat is high in the state. Also, the cost of rearing the goat is minimal and can be managed by the household women. There is an evident gap in the domestic demand for goat products and their supply. The goat-rearing enterprise holds large risks, such as goats' high mortality and morbidity due to increased incidence of disease spread. It could primarily result from a lack of appropriate hygiene standards and the unavailability of proper healthcare services. Considering the significance of livestock rearing as a potential economic activity for rural households and its feasibility, JEEViKA introduced the Pashu Sakhi Model.

The goat intervention was implemented –

- To improve the income of rural SHG households
- To improve breed and productivity

enhance productivity

- To reduce mortality and create a support system for preventive and curative health care system
- To establish a community-managed extension and marketing system

Strategy of implementation

A cluster-based approach was adopted for the goat-rearing intervention in Bihar. The goat clusters would be identified based on the geographical suitability and higher population of goats.

The goat-rearing intervention has followed a multi-pronged strategy for implementation as follows;

- Formation of goat rearer's producer groups
- Deployment of Pasu Sakhi and their training with the help of experts and expert agencies
- Provision of extension and marketing services through Pasu Sakhis
- Preventive care through health and vaccination camps
- Induction of improved variety of goat breeds
- Improved feeding habits and inclusion of nutrition supplements in goat's feed

2. Integrated Poultry Development Scheme (1&2)

In Bihar, it is evident that most landless and marginal farmers depend on poultry and small ruminant rearing for livelihoods. The poultry sector provides direct employment to over two million people. The potential contribution of poultry to the livelihoods of the rural poor remains largely unexploited because of poor animal husbandry practices, limited access to critical inputs, unorganized rural institutions, and the absence of effective market linkages. Apart from being a viable source of income, poultry also has the potential to correct household-level nutritional imbalances, particularly related to low protein intake by poor households.

Poultry interventionv in JEEVIKA is being implemented in convergence with the Department of Animal and Fishery Resources, GoB, under the "Integrated Poultry Development Programme", to leverage significant benefits related to initial intervention investments at the mother unit and SHG household level.

Design of poultry intervention

Backyard poultry intervention was implemented through a model of the mother unit, which will function as a hub for the backward and forward linkages serving individual household-level units. SHG members with common interests are organized into informal Producer Groups at

CLF/VO level, supported through CLFs/Nodal VOs. Members of poultry PGs take care of the day-to-day management of the Mother Unit along with the Mother Unit owner. About 150-180 SHG members of the same interest would form poultry producer groups at CLF/VO level. Each poultry PG is linked with a poultry Mother unit run by an entrepreneur who rears the birds for 28 days in Mother Unit. PGs monitor the whole process at the Mother Unit level. A VRP is placed to facilitate and support the care and management of poultry birds at the Mother Unit and household level.

BRLPS promotes dual-purpose birds (meat and egg as produces) that require low input for rearing. Chicks are reared at the Mother Unit for 28 days. After the rearing of chicks for 28 days at the Mother Unit, 45 chicks are distributed to interested SHG members in two lots (25 in the first lot and 20 in the second lot) for rearing at the backyard level. At the backyard level cage is prepared for the night shelter. After 2 months of rearing, Male birds gain weight up to 2-2.5kg, which the member sells for meat, and female birds are kept for 18 months to lay 120-150 eggs.

3. Fisheries intervention (Convergence with the Department of Animal and Fisheries Resource)

Fish farming is an important and fast-growing sector in Bihar. Bihar stands 4th in inland fish production in India. As of the financial year 2021-2022, total fish production in Bihar was 7.61 lakh metric tonnes (LMT), whereas demand was 8.02 LMT, and a total of .67 LMT of fish is being imported, whereas export is .37 LMT.

The public ponds revived and created under the Jal-Jeevan-Hariyali mission (JJHA) were transferred to the community-based institutions of BRLPS for maintenance and livelihood generation activities. BRLPS has decided to promote community-based fisheries intervention to reap multi-faceted benefits. The main objective of the Fisheries Intervention is to improve the income of the rural landless/marginal farmers with monthly income less than INR 5000 through livelihood activities such as fish and integrated fish farming along with sustainable maintenance and management of ponds allotted.

The BRLPS has taken up the fishery intervention for the following activities –

- To maintain and manage the ponds created or restored under the Jal Jeevan Hariyali Mission by community institutions of BRLPS.
- To enhance the livelihoods and income of SHG members from poor households.
- To enhance the production and productivity of inland fish farming/ integrated fish farming.
- To provide backward and forward linkages essential for long-term profitability.
- To generate self-employment among SHG members.

The fisheries model of the BRLPS comprises the SHG members, i.e. 3-7 members/acre, which further forms an informal Fisheries Producer Group (FPG). This FPG implements fisheries intervention and is being monitored by the Village Organization (VO) of the BRLPS. FPG and the office bearers form a Matasya Upsamiti for overall decision-making and progress. To provide on-ground support to the FPG members, a Matasya Sakhi is selected. The Matasya Sakhi acts as a CRP (Community Resource Person) and looks after all technical and non-technical aspects of basic fish farming. Further, when this intervention is scaled up, Fisheries Producer Company (FPC) will be incorporated for further value chain development.

Community Professionals Under LIVESTOCK Theme

Archana Khushi, Manager Communication, Jehanabad

Livestock contributes 38% to the gross value of agricultural output in Bihar. Furthermore, since many households are either landless or land poor in rural Bihar, this sector supplements the income they generate from their other agricultural enterprises and farm labor. The livestock herd of Bihar is very large and the species makeup diverse. Different reports indicate that the poverty and seasonal unemployment are major causes of migration and unhealthy life in bihar. The projects' experience so far indicates that there is urgent need of income enhancement over the existing employment generation to access food, nutrition and quality life.

JEEVIKA is making the livestock sector one of the principle sectors with potential to help achieve the development goals of the state. Thus for increasing livestock productivity and production further, a theme called livestock has been expended within JEEVIKA, under which activities related to livestock are promoted. JEEVIKA made some policy under which live stock activity was encouraged. This initiative is meant to help increase and target public and private investment to further modernize the livestock sector and enable it to make an even more substantial contribution to achieving state development goals. Keeping in view the need of and scope of live stock activities in the rural areas of Bihar, trained cadres in JEEVIKA have been developed at village or panchayat level to support and guide in livestock's activities. These cadres assist the SHG members in different activities related to live stocks. There are mainly three types of cadres dealing with livestock in JEEVIKA.

Village resource person – poultry/ poultry resource person

To support backyard poultry, CLF/Nodal VO provides one PRP for one mother unit. PRPs are poultry resource persons who provide technical assistance and communication skills to raise poultry at the mother unit and household level. Selected from SHG households, they must have at least an 8th-grade education and knowledge of poultry farming. Six PRPs are initially assigned per mother unit or 250 households, which decreases to three after one cycle. PRPs deliver chicks, provide vaccination, collect eggs, and maintain VRP-Poultry registers. They monitor households weekly, attend VO/SHG meetings, and receive regular training. PRPs are compensated with an honorarium of Rs.1750 per month, Rs.200 fixed TA per month, Rs.50 per month for mobile services, and Rs.500 per month for counseling and record-keeping. They are crucial in supporting the livestock business of rural poor didis.

Pashu Sakhi

The goat rearing sector in Bihar faces a major constraint due to high mortality and morbidity rates in goat flocks caused by diseases. To address this, women animal health workers called Pashu Sakhi have been trained to provide preventive health services and first aid to goat rearers. Pashu Sakhi is selected from SHG households and have good communication skills and are physically fit, and at least 18 years old with an 8th-grade education. They receive 15 days of residential training to learn about goat breeds, feed and health management, diseases prevention measures, marketing, and more. Pashu Sakhi provides handhold support, information on different breeds, and training on

feed and house management to goat rearers. They also provide health care services, including vaccination and de-worming, and update market information to PG members. Pashu Sakhi earns an honorarium and task-based incentive and charges a service fee. They are responsible for updating all registers of the goat producer group, conducting meetings, and providing periodic reports. Pashu Sakhi has emerged as a support system for goat rearers, providing them with better income opportunities.

Matashya sakhi

The Jal Jeevan Hariyali Mission in Bihar aims to conserve water resources and manage them institutionally. To tackle water scarcity, the campaign plans to build and renovate ponds, dams, and Ahar/pines in 38 districts of Bihar. Community institutions of JEEVIKA are responsible for maintaining and managing the allotted ponds, which are being used for livelihood activities like fisheries by forming fish producer groups. The technical assistance and capacity building of these groups are provided by a cadre called "matsya sakhi," who also conduct various tasks like selecting beneficiaries, conducting surveys, providing training, and updating records. Matsya sakhi receives a monthly honorarium of Rs. 4000. These cadres also play a crucial role in enhancing the livelihood activities related to livestock of self-help group members. Thousands of such cadres are supporting poor villagers in their income enhancement through JEEVIKA support.

दीदी की कहानी दीदी की जुबानी

केस - 1 *पारो देवी ने ठान लिया तो घर वालों ने भी मान लिया*

मुर्गीपालन से ज्ञान्ति हुई सशक्त

✍ Ashok Kumar, Manager Communication, Arwal

अरवल जिला के कलेर प्रखंड के महावीरगंज गाँव की रहने वाली ज्ञान्ति देवी नवीं कक्षा तक पढ़ी हुई हैं। उनके परिवार में पति के अलावे 2 बेटी और एक बेटा है। उनके पति बिहार के बाहर राजस्थान राज्य में ड्राइवर का काम करते हैं। इस कार्य से उन्हें हर माह 12–15 हजार की आमदनी हो जाती है। उसी आय से उनके परिवार का पालन–पोषण कठिनाई के साथ हो रहा था। लेकिन बच्चों की पढ़ाई–लिखाई में आर्थिक समस्या होती थी। ज्ञान्ति देवी अपनी आर्थिक स्थिति को मज़बूत करने के लिए रोजगार की तलाश कर रही थी। ऐसे में साल 2016 में पार्वती जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ना उनके लिए काफी लाभप्रद साबित हुआ। ज्ञान्ति देवी समूह की नियमित साप्ताहिक बैठक में भाग लेकर बचत करने लगी। समूह के माध्यम से उन्हें जीविका द्वारा संचालित गतिविधियों के अलावा कई सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी मिली। वर्ष 2019 में अपनी आमदनी को बढ़ाने के लिए पूर्व से चल रहे छोटे स्तर पर मुर्गीपालन व्यवयाय को बड़े स्तर पर करने का फैसला किया। लेकिन ज्ञान्ति देवी के पास मुर्गीपालन करने हेतु पूंजी और जगह दोनों को अभाव था। इस कार्य हेतु उन्होंने समूह से 60,000 रूपये ऋण लिया। सबसे पहले ज्ञान्ति देवी ने सालाना 10 हजार रूपये पर 5 कट्ठा जमीन लीज पर लेकर मुर्गीपालन हेतु शेड का निर्माण करवाई। उसके बाद मुर्गीपालन हेतु एक प्राइवेट कंपनी से 3500 चुजे लेकर पालना शुरू किया। ज्ञान्ति जीविका दीदी कहती है कि–'मुर्गीपालन में काफी सावधानियों की जरूरत पड़ती है। जब एक दिन का चूजा प्राप्त होता है तो चूजा का वजन 30–35 ग्राम रहता है। चूजों को नियमित उनके खान–पान का ख्याल रखना पड़ता है। जिसके कारण चूजों का विकास ससमय हो जाता है। एक मुर्गी का वजन 40 दिनों में डेढ़ किलो से 2 किलो तक हो जाता है। हर स्तर के चूजों को खाने के लिए अलग–अलग दानों का इस्तेमाल करती है। 1–10 दिन, 10–20 दिन, 20–20 दिन और 30–40 दिन के चूजों को उनके खुराक के अनुसार दाना खिलाती हैं। खुराक खिलाने के अलावा चूजों का जल्दी विकास हो इसके लिए नियमित मात्रा में गुड़ का घोल भी पिलाती है। चूजों को बीमारी से बचाव

के लिए ससमय टीका लगाती है। जीविका द्वारा उन्हें मुर्गी पालन से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया, जिससे उनका मनोबल बढ़ा है। तैयार मुर्गियों को वापस उसी कंपनी को बेचती है। सारा खर्च कंपनी करती हैं। एक मुर्गी को पालने में लगभग 75 से 80 रूपये का खर्च आता है। ज्ञान्ति देवी को प्रति मुर्गी औसतन 15–25 रूपये की आमदनी हो जाती है। प्रथम बार मुर्गीपालन से लगभग 70,000 रूपये उन्हें आमदनी हुई है। जिसके बाद ज्ञान्ति देवी इस रोजगार को और अच्छे तरीके से करने लगी है। मुर्गीपालन के कार्यों में सहयोग के लिए एक मजदूर को भी रखी है। ज्ञान्ति दीदी कहती हैं कि मौसम के अनुसार बड़ी मुर्गी और छोटे चूजों को पालने में काफी सावधानी बरतनी होती है। गर्मियों के दिनों में डेढ़ से दो किलोग्राम के मुर्गी को ठंडक पहुंचाने के लिए शेड के अन्दर पंखा और शेड के ऊपर स्पिनर से पानी की फुहार का छिड़काव भी करवाती हैं। ठण्ड के समय छोटे चूजों को ठण्ड से बचाने के लिए शेड के अन्दर भट्ठी जलाती है। इस बीच मुर्गीपालन के लिए उन्होंने पशुपालन विभाग से विस्तृत प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है। एक साल में वह 5 से 6 लॉट मुर्गी का पालन कर लेती हैं। प्रति लॉट में लगभग 2000–2500 मुर्गी का पालन करती हैं, जिससे लगभग 30000 से 40000 रूपये की आमदनी हो जाती है। अच्छी आमदनी होने से वह समूह से लिए गए ऋण को किस्तों में वापस भी कर रहीं हैं। अपने घर की मरम्मत भी करवायी है। अपने बच्चों को पढ़ने के लिए विद्यालय भेज रही हैं।

केस-3 The Inspiring Story of Babita Bharti from Purnea

From Daily Wage Worker to Successful Pashu-Sakhi and Board Member

✍ Anshu Singh, YP-KMC

Babita Bharti, a resident of Dagarwa block in Purnea district, has found stability in her livelihood through the Goatery intervention program offered by JEEVIKA. She has been associated with this program for a while and her participation in the Maa Santoshi Self-Help Group has brought a significant change to her life. Prior to joining the SHG in 2017, Babita worked as a daily wage laborer with her husband. Even after becoming a member of the SHG, she continued to work as a daily wage laborer. However, her active involvement in the SHG meetings led to the recognition of her education qualification and skills by other members. As a result, she was nominated to become Pashu-Sakhi in the Ujjwal Producer Group in 2018.

Babita received specialized training on goat rearing, de-worming, and vaccination for different types of diseases among goats. She took a loan of Rs 10,000 from her SHG to purchase four goats, which she nurtured and later sold two of them for Rs 15000, earning a considerable profit. In 2022, she was elected as a member of the Board of Directors of Simanchal Jeevika Goat Producer Company. Babita is currently providing services to 34 members of the Producer Company. She offers services such as de-worming, vaccination, and treatment for other diseases, as well as providing herbal medicines for their treatment. This has allowed her to enhance her monthly income by approximately 2000-3000, thereby improving her standard of living.

केस-2 समूह से मिली वित्तीय मदद

बकरी और गाय पालन से बनी आत्मनिर्भर

Bikash Kumar, Manager Communication, Bhagalpur

भागलपुर जिला के गोपालपुर प्रखंड अन्तर्गत मकनपुर गांव की रहने वाली चांदनी देवी जीविका स्वयं सहायता समूह में जुड़ने के पूर्व मजदूरी पर आश्रित थी। वर्ष 2019 में जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने बकरी पालन एवं गाय पालन को अपनी रोजी–रोटी का प्रमुख साधन बना लिया। इन गतिविधियों को अपनाकर अब वह आत्मनिर्भरता की राह पर अग्रसर है।

दरअसल चांदनी देवी अपने परिवार का गुजारा करने के लिए दूसरे के खेतों या घरों में मजदूरी का काम करती थी। लेकिन मजदूरी के रूप में मिलने वाले पैसे से अपने परिवार के लिए दो वक्त की रोटी जुटाना भी मुश्किल होता था। इसी बीच नवंबर 2019 में वह कावेरी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह से जुड़ने के बाद वह बैठकों में नियमित रूप से हिस्सा लेने लगी। इसके कुछ ही दिन बाद इन्होंने अपने समूह से 12,000 रुपये ऋण लिया। इस राशि से उसने दो बकरियां खरीदी और इसका पालन–पोषण करने लगी। कुछ माह बाद दोनों बकरियों ने दो–दो बच्चों को जन्म दिया। अब उनके पास पास कुल 6 बकरियां हो गयी। इन बकरियों को सही तरीके पालने के लिए वह दिन में बकरियां चराने जाती है और खेतों से घास काट कर लाती है। आमतौर पर बकरियों के पालने में लागत कम होती है लेकिन इन्हें चराने और घास लाने आदि में मेहनत अधिक करनी पड़ती है। इस प्रकार दिन–रात काफी मेहतन से वह इन बकरियों का पालन–पोषण करती है। बकरियों के बच्चे बड़े होने पर वह इन्हें बेच देती है।

आय का अच्छा साधन– चांदनी देवी बताती है एक बकरी एक बार में अमूमन दो से तीन बच्चों को जन्म देती है। उसके पास ऐसी छह बकरियां है। एक वर्ष में उसके पास कम से कम 12 से 15 बच्चे तैयार हो जाते हैं। वह बताती है कि मवेशी व्यापारियों के द्वारा औसतन 5 से 8 हजार रुपये की दर से बकरे–बकरियां खरीद लिए जाते हैं। इससे उन्हें अच्छी आय प्राप्त होती है। चांदनी देवी बताती है कि पिछले दो वर्षों में वह कुल 12 बकरे–बकरियों को बेचकर 70–75 हजार रुपये से अधिक की आय अर्जित कर चुकी है। वहीं अभी भी उनके पास 6 बकरियां और उनके बच्चे मौजूद हैं।

चांदनी देवी बताती है कि बकरी पालन से होने वाली आय तथा समूह से कुछ रुपये ऋण लेकर उन्होंने एक गाय भी खरीदी है। अब वह बकरी के साथ–साथ गाय पालन भी कर रही है। वह बताती है कि गाय से प्रतिदिन 4 लीटर दूध का उत्पादन हो रहा है। इनमें से 2 लीटर दूध वह अपने परिवार के खाने के लिए रखती है जबकि दो लीटर दूध 50 रुपये प्रति लीटर की दर से बेच देती है। इससे उन्हें प्रतिदिन 100 रुपये तक की आमदनी हो जाती है। इसके अलावा वह पट्टे पर जमीन लेकर खेती भी करने लगी है ताकि गाय–बकरियों के लिए चारे की व्यवस्था आसानी से हो सके।

चांदनी देवी का पूर समय अब खेती के साथ–साथ गाय एवं बकरी पालन में गुजरता है। साथ ही इससे होने वाली आमदनी से वह अपने परिवार का पालन–पोषण करती है। वह बताती है कि खेती के साथ–साथ गाय और बकरी पालन से वह आत्मनिर्भर बन गई है। अब उन्हें काम की तलाश में किसी के घर नहीं जाना पड़ता है और न ही जरूरत के वक्त पैसे के लिए किसी के आगे हाथ फैलाने की नौबत रहती है। चांदनी देवी का कहना है कि जीविका समूह से जुड़ने के बाद उन्हें जीवन जीने की नई राह मिल गयी है।

केस-4 समूह से मिली वित्तीय मदद

महिला स्वावलंबन की राह दिखा रही नुसरत

✍ Roushan Kumar, Manager Communication, Lakhisarai

अपने पति की प्रताड़ना से परेशान नुसरत ने विपरीत परिस्थितियों में खुद को स्वावलंबी बनाया है। नुसरत खातून अब आर्थिक एवम सामाजिक रूप से भी आर्थिक एवम सामाजिक रूप से सशक्त हुई है। नुसरत खातून लखीसराय जिला अंतर्गत हलसी प्रखंड स्थित प्रेम डीहा गाँव में अपने मायके में रहती हैं। शादी के तीन माह बाद ही इनके पति शराब के नशे में इनके साथ मार–पीट करना शुरू कर दिया। नुसरत का विवाह कम उम्र में ही हरियाणा के शमशेर के साथ हुई थी। पति की प्रताड़ना से तंग आकर नुसरत अपने मायके आ गई। अपने पिता पर आश्रित नुसरत बताती हैं कि तीन साल तक वो अपनी बेटी के साथ कठिनाई से जिंदगी जी रही थी।

इनके हालत को देखते हुए जीविका समूह से जुड़ी महिलाओं ने इन्हें तारा जीविका स्वयं सहायता समूह से जोड़ा। पिता बीड़ी बनाने का काम करते थे। उन्ही से दस रुपया लेकर समूह में बचत करने लगी। अपनी गरीबी दूर करने और स्वावलंबन हेतु इनके रूचि के अनुरूप इन्हें चूड़ी दुकान के लिए 20 हजार रुपये की लागत से चूड़ी दुकान का कारोबार शुरू किया। चूड़ी दुकान से हुए मुनाफे से तीन बकरियां खरीद ली। एक बकरी का आठ हजार रूपया में बेच कर मुनाफा कमाया। अब इन्होने गाँव के दो लोगों को रोजगार भी दे रखा है। दोनों लोग फेरी लगाकर चूड़ी बेचते हैं। उन्हें प्रति माह 6 से 7 हजार रुपया मुनाफा हो रहा है। वर्तमान समय में इनके पास लगभग साठ हजार की परिसंपत्ति है। इनकी बेटी हॉस्टल में रहकर पढाई कर रही है। नुसरत बताती हैं कि जीविका ने उनके जीवन में खुशहाली आई है। बकरी पालन ने उन्हें स्वावलंबी बनाया है। अब वो खुद के बल पर बेटी को भी पढ़ा रही है। साथ ही अपने माता –पिता की भी देख–भाल कर रही है। पिता ने बीड़ी बनाने का काम छोड़ दिए और अपने बेटी के व्यवसाय में उनकी मदद करते हैं। नुसरत को इस बात का मलाल है कि पति से उनका साथ छूट गया। नुसरत बताती हैं कि ससुराल जब छोड़कर आई थी तब मायके में ग्रामीणों के ताने भी सुनने को मिलते थे। मैं काफी परेशान हो जाती थी , लेकिन जीविका के सहयोग और जीविका दीदियों की हौसला अफजाई ने मेरा मनोबल बढ़ाया और मैने अपने बल पर कुछ करने की सोची। चूड़ी और बकरी पालन व्यवसाय से हुए मुनाफे से नुसरत ने मायके की झोपड़ी को पक्के मकान में तब्दील कर दिया है। अब चेहरे पर आत्मविश्वास और स्वावलंबन की मुस्कान है। उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ भी मिलने लगा है।

नुसरत तारा जीविका महिला स्वयं सहायता समूह की बैठक में नियमित रूप से आती हैं। बचत भी करती हैं। साथ ही अन्य सदस्यों को भी स्वावलंबी बनने के गुर सीखती हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी अपने समाधान यात्रा के क्रम में लखीसराय में जीविका स्टॉल पर नुसरत से मिले भी थे। अनुभव साझा करने वाली दीदियों में से एक नुसरत खातून भी थी। नुसरत खातून अपने व्यवसाय को और आगे बढ़ाना चाहती हैं। इसके लिए इन्हे प्रशिक्षण भी मिला है। नुसरत खातून स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन और संकुल स्तरीय संघ द्वारा आयोजित विभिन्न जन जागरूकता अभियान और कार्यक्रमों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। वो बाल विवाह उन्मूलन और दहेज मुक्त विवाह की पक्षधर। है। इसीलिए वो अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलाकर योग्य भारतीय बनाना चाहती हैं। वो नही चाहती हैं कि एक बहु और पत्नी होने के नाते जितना कष्ट उन्होंने झेला है वो कष्ट कोई और भी बेटी ना झेले। लिहाजा वो बेटियों की उच्च शिक्षा पर जोर देती हैं। हालांकि बेटी को उच्च शिक्षा और खुद के द्वारा व्यवसाय करने पर चंद लोगों को आज भी आपत्ति है। फिर भी तमाम सामाजिक कुरीतियों और पर्दा प्रथा को दरकिनार करते हुए नुसरत महिलाओं को नाजिर पेश करते हुए स्वावलंबन की राह पर अग्रसर है।

बड़की दीदी
और पशु धन

और वहाँ आधुनिक मशीनों के द्वारा दूध में मौजूद वसा की जाँच की जाती है और उसी आधार पर सरकार द्वारा निर्धारित कीमत दी जाती है। दूध का सही मूल्य मिलता है और फायदा-ही-फायदा होता है।

वह बड़की दीदी, यह तो सच में फायदे वाली बात है!

हाँ विमला, यह सच में फायदे वाली बात है! अब सुनो, पशुधन के बारे में....

अगला पशुधन है, बकरी पालन। राज्य सरकार की 'समेकित बकरी एवं भेड़ विकास योजना' के तहत परियोजना से जुड़ी महिलाओं को 3-3 बकरियाँ व्यवसाय हेतु दी जाती हैं। आप ही के बीच की दीदी को प्रशिक्षित कर पशु सखी बनाया जाता है, जो उन्नत बकरी पालन एवं व्यवसाय में बढ़ोतरी हेतु विभिन्न सेवाएं न्यूनतम दर के साथ प्रदान करती हैं।

जैसे मृत्यु दर घटाने हेतु सही समय पर टीका एवं मेमनों को कृत्रिम दुग्ध की जानकारी, उत्पादकता हेतु प्राथमिक उपचार सह व्यवहार परिवर्तन, नस्ल सुधार हेतु उन्नत बकरे से प्रजनन, सही समय पर विक्रिमिकरण एवं संतुलित आहार, तो क्यों दीदी हुई ना फायदे की बात?

जी बड़की दीदी। इस तरह पशु सखी दीदी से लाभ पाने के बाद बाजार संबंधी फायदे हम कैसे ले पाएंगे?

हमारी बकरियों में बढ़ने की क्षमता अधिक होती है, साथ ही एक से ज्यादा अधिकतम दो बच्चे देने की क्षमता रखती है। इनसे कम समय में ज्यादा लाभ हेतु आवश्यक है कि पशु सखी द्वारा तीन माह के अंदर नर मेमनों का बंध्याकरण करवा लें साथ ही उनमें बढ़ोत्तरी के लिए संतुलित रूप से दाना मिश्रण खिलाएं।

बेचने के पूर्व बकरियों का वजन पशु सखी द्वारा करवाना चाहिए, ताकि खरीददार ठग न सकें। परियोजना से जुड़ी अन्य दीदियों ने तो बकरी विक्रय केंद्र लगाकर अपना बाजार लगाने की पहल की है और बाजार में चल रहे दाम एवं वजन के अनुसार ही बकरी की बिक्री की है। मांस व्यवसाय में बकरियों की अच्छी माँग होती है, इसलिए लाभ ही लाभ होता है।

वाह बड़की दीदी! आज आपसे कई पते की बात जानने को मिलीं।

मुझे पूरा विश्वास है कि अब तमलोग अपनी-अपनी पसंद के हिसाब से पशुधन का लाभ उठाओगी और तुम अपनी कमाई में बढ़ोतरी कर अपने परिवार को बेहतर जीवन दे सकोगी।

हाँ-हाँ बड़की दीदी!

समाप्त.

मन की कलम से

"हम" से हमारा समाज

मैं से तुम से
मिलकर बने "हम"
हमसे बने हमारा समाज
समतामूलक समाज

न्याय हो, नेह हो
हो मानवता मानव में
आओ मिलकर भरे हुँकार
हो सुंदर हमारा समाज

लेकिन,
अब भी हैं
बहुत समस्याएँ इसमें
पुरातन से है घेरे बाधाएँ इसमें

मिलकर करना होगा जतन
न रहे कमजोर कोई तन – मन

आओ हो जाएँ एक
एक – एक कर बने अनेक
एकता से तोड़ेंगे बाधाएँ ,
मिलकर खुशहाली का परचम लहराएँ

हो मुश्किल राह कितनी भी
विषम शूल सा पथ हो कितना भी
हाथ पकड़ बढ़ते जाएँ
प्रगति की सीढ़ी चढ़ते जाएँ

मैं बढ़ूँगा
तुम बढ़ोगे
बढ़ेगा हमारा समाज

प्रकृति – पर्यावरण मानवता संग
आओ बनाएँ
सम – सुंदर – सम्यक हमारा समाज।

Suman Kumar
Manager Communication, Kishanganj

Amidst the Fields: A Tribute to Livestock Rearing

Amidst the fields and rural plains,
Livestock roam, grazing without strains,
Cows, goats, and poultry galore,
Brought up with care, they are adored.

Their milk, their meat, their eggs so fresh,
Provide sustenance to those in distress,
Livelihoods flourish, as they grow,
Their owners reap the rewards, they know.

Livestock rearing is held so dear,
A way of life for generations old,
Their stories and traditions forever told.

For those who tend and those who cherish,
Their livestock's health, never to perish,
May their efforts continue to thrive,
As they keep their livestock alive.

Arpan Mukherjee
YP-KMC

रचना आमंत्रण

जीविका द्वारा च्वेंजमेकर्सश (द्विभाषीय – त्रैमासिक) पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका में जीविका सम्पादित गतिविधियों / कार्यक्रमों / सफलता की कहानियों के प्रकाशन के साथ ही विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे जीविका कर्मियों के अनुभवों को भी स्थान दिया जाता है। जीविका कर्मियों से आग्रह है कि वे जीविका से जुड़े अपने अनुभवों / सफलता की कहानियों / कविता / गतिविधियों आदि को 'चेंज मेकर्स' में प्रकाशन के लिए भेजें। रचना हिन्दी और अंग्रेजी या दोनों में से किसी भी भाषा में हो सकती है। रचना के साथ उससे संबंधित तस्वीरें अवश्य संलग्न हों। रचनाकार अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता और संपर्क नंबर का उल्लेख अवश्य करें। रचना को निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं–

changemakers-brlp@gmail-com

प्रकाशन योग्य रचनाओं को रचनाकार के नाम के साथ पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

– संपादकीय टीम, चेंजमेकर्स ,

Neerathon
Run for NEERA

Digital Transformation
Conclave
organised by JEEVIKA

State Operational
Framework Workshop
on
PRI CBO Convergence

Participation in
G20 Summit
at Gyan Bhawan patna

बिहार सरकार

JEEVIKA

Rural Development Department,Govt. of Bihar
Vidyut Bhawan - II,1st & 3rd Floor, Bailey Road, Patna- 800 021
Ph.:+91-612-250 4981 :: Fax : +91-612-250 4960,
Website : www.brlps.in :: E-mail : info@brlps.in